PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Focus News, delhi
Thu, 17 Aug 2017, Page 6
Width: 95.42 cms, Height: 100.70 cms, a3, Ref: 5.2017-08-17.51

नया भारत समृद्ध हो, शक्तिशाली हो और विज्ञान के क्षेत्र में भारत का दबदबा हो, ऐसा भारत हमें बनाना है : नरेंद्र मोदी

न गाली से-न गोली से, हर कश्मीरी को गले लगाकर समस्या सुलझाएंगे

नयी दिल्ली, फोकस न्यूज, अशांति के दौर से गुजर रहे कश्मीर के लोगों को लक्षित कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि गोलियों या गालियों से कश्मीर मुद्दे का हल नहीं हो सकता और प्रत्येक कश्मीरी को गले लगाकर ही इसका समाधान किया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने 71वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर लालकिले की प्राचीर से राष्ट्र को अपने करीब 56 मिनट के संबोधन में इस बात पर बल दिया कि सुरक्षा शीर्ष प्राथमिकता है। उन्होंने जातिवाद एवं सांप्रदायिकता को खारिज करते हुए कहा कि आस्था के नाम पर हिंसा को स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने चौथी बार लालकिले से अपने संबोधन में कश्मीर के लोगों को गले लगाने का आह्वान करते हुए कहा, ''न गाली से, न गोली से, परिवर्तन होगा गले लगाने से...। समस्या सुलझेगी, हर कश्मीरी को गले लगाने से।'' मोदी ने कहा कि चंद अलगाववादी राज्य में समस्याएं पैदा करने के लिए विभिन्न चालें चलते हैं। किन्तु सरकार कश्मीर को फिर से स्वर्ग बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। मोदी ने कहा कि जम्मू कश्मीर के लोगों के विकास के सपने को पूरा करने में मदद के लिए जम्मू कश्मीर सरकार ही नहीं बल्कि पूरा देश उनके साथ है। प्रधानमंत्री की यह टिप्पणी ऐसे समय में आयी है जबकि कश्मीर घाटी में अशांति एवं हिंसा का दौर पिछले कुछ समय से बना हुआ है। आतंकवाद के प्रति कोई नरमी नहीं बरते जाने की प्रतिबद्धता जताते हुए उन्होंने कहा कि भारत की सुरक्षा सरकार के लिए शीर्ष प्राथमिकता है तथा सर्जिकल स्ट्राइक ने उसको रेखांकित किया है।

मोदी ने यह भी कहा कि विश्व में भारत का दर्जा बढ़ रहा है तथा आतंकवाद की समस्या से मुकाबले में कई देश भारत को सहयोग दे रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत किसी भी मोर्चे..जल, थल अथवा साइबर आकाश में चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है। उन्होंने डोकलाम में चीन के साथ तनातनी की पृष्ठभूमि में यह बात कही। मोदी आज आधी बांह का कुर्ता, चूड़ीदार पायजामा और राजस्थानी साफा बांधकर आये थे। उन्होंने अपने संबोधन की शुरूआत देश के विभिन्न हिस्सों में प्राकृतिक आपदाओं में मारे गये लोगों, और खासतौर से गोरखपुर के सरकारी अस्पताल में जान गंवाने वालों बच्चों का उल्लेख करते हुए कहा कि समूचे राष्ट्र की संवेदनाएं प्रभावित परिवारों के साथ है। उन्होंने कहा कि भारत शांति, एकता एवं भाईचारे के पक्ष में है तथा जातिवाद एवं सांप्रदायिकता काम नहीं आएगी। उन्होंने आस्था के नाम पर हिंसा करने वालों की कड़ी भर्त्सना करते हुए कहा कि इसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। लालकिले से चौथी बार राष्ट्र को संबोधित करते हुए मोदी ने अपनी सरकार की तीन साल की उपलब्धियों एवं प्रमुख निर्णयों विशेषकर जीएसटी लागू करने एवं नोटबंदी, की चर्चा की। मोदी ने कहा, ''राष्ट्रीय सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है। हम सभी क्षेत्रों में अपने देश की रक्षा करने में सक्षम हैं।'' उन्होंने कहा, ''आजाद भारत में, हर देशवासी के दिल में देश की रक्षा–सुरक्षा एक बहुत स्वाभाविक बात है। हमारा देश, हमारी सेनाएं, हमारे वीर पुरुष, हर वर्दीधारी बल, कोई भी हो, सिर्फ थलसेना, वायुसेना, नौसेना नहीं, सारे सशस्त्र बल, उन्होंने जब–जब मौका आया हैय अपना पराक्रम दिखाया है। अपना सामर्थ्य दिखाया है, बलिदान की पराकाष्ठा करने में ये हमारे वीर कभी पीछे नहीं रहे हैं। चाहे वाम चरमपंथ हो, चाहे आतंकवाद हो, चाहे घुसपैठिये हों, चाहे हमारे भीतर कठिनाइयां पैदा करने वाले तत्व हों। हमारे देश के इन वर्दी में रहने वाले लोगों ने बलिदान की पराकाष्ठा की है। और जब सर्जिकल स्ट्राक हुई, दुनिया को हमारा लोहा मानना पड़ा, हमारे लोगों की ताकत को मानना पड़ा।

प्रधानमंत्री ने कहा, ''यह साफ है कि देश की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है, आंतरिक सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है। समुद्र हो या सीमा हो, साइबर हो या अंतरिक्ष हो, हर प्रकार की सुरक्षा करने में भारत अपने आप में सामर्थ्यवान है और देश के खिलाफ कुछ भी करने वालों के हौसले पस्त करने के लिए हम ताकतवर है। उन्होंने कहा कि जिस तरह आजादी के आंदोलन में नारा था ''भारत छोड़ो'' उसी तरह नारा होना चाहिए मेरी बहनों को, जो तीन–तलाक के खिलाफ लडाई लड़ रही हैं, मैं हृदय से उनका अभिनदंन करता हूं और मुझे लूटा, वे आज चौन की नींद नहीं सो सकते।'' उन्होंने देश के लोगों से ''चलता है'' रूख को त्यागने तथा ''बदल सकता है'' रूख को अपनाने का आह्वान किया।प्रधानमंत्री ने बालगंगाधर तिलक के ''स्वराज'' के नारे का स्मरण करते हुए कहा कि अब हमारा ध्येय वाक्य ''सुराज'' होना चाहिए उन्होंने कहा, '' नया भारत हमारी सबसे बड़ी ताकत है, लोकतंत्र है। लेकिन हम जानते हैं कि हमने लोकतंत्र को मत–पत्र तक सीमित कर दिया है। लोकतंत्र मत–पत्र तक सीमित नहीं हो सकता। और इसलिए हम नये भारत में उस लोकतंत्र पर बल देना चाहते हैं जिसमें तंत्र से लोक नहीं, लेकिन लोगों से तंत्र चले, ऐसा लोकतंत्र नये भारत की पहचान बने, उस दिशा में हम जाना चाहते हैं।'' प्रधानमंत्री ने कहा, '' लोकमान्य तिलक जी ने कहा था, 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'। आजाद भारत में हम सबका मंत्र होना चाहिए, 'सुराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'। 'सुराज्य' हम सबका दायित्व होना चाहिए। नागरिक को अपनी जिम्मेदारियां निभानी चाहिए, सरकारों को अपनी जिम्मेदारियां निभानी चाहिए। '' उन्होंने कहा, '' देश जब स्वराज्य से सुराज्य की ओर चलता है, तो देशवासी पीछे नहीं रहते। जब मैंने गैस सब्सिडी छोड़ने के लिए कहा, देश आगे आया। स्वच्छता की बात कही, आज भी हिन्दुस्तान के हर कोने में कोई न कोई स्वच्छता के अभियान को आगे बढ़ा रहा है। जब नोटबंदी की बात आई, दुनिया को आश्चर्य हुआ था, यहां तक लोग कह रहे थे, अब मोदी गया। लेकिन नोटबंदी में सवा सौ करोड़ देशवासियों ने जिस धैर्य को दिखाया, जिस विश्वास को बताया और उसी का परिणाम है कि आज भ्रष्टाचार के खिलाफ नकेल लगाने में हम एक के बाद एक कदम उठाने में सफल हो रहे हैं। हमारे देश के लिए इस नई लोकभागीदारी की परंपरा...जनभागीदारी से ही देश को आगे बढ़ाने में हमारा प्रयास है।'' उत्तर प्रदेश के एक सरकारी अस्पताल में बच्चों की मौत एवं देश के विभिन्न भागों में प्राकृतिक आपदाओं की घटनाओं का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि पूरे देश की संवेदनाएं प्रभावित लोगों के साथ हैं। मोदी ने कहा, ''देश के विभिन्न हिस्सों ने हाल में प्राकृतिक आपदाओं का सामना किया। बच्चों की अस्पताल में मौत हो गयी। पूरा देश उनके साथ है।'' प्राकृतिक आपदाओं को एक बड़ी चुनौती करार देते हुए उन्होंने कहा कि अच्छी वर्षा देश की समृद्धि में योगदान देती है जबकि मौसम बदलाव से समस्याएं खड़ी होती हैं।राष्ट्रीय सुरक्षा की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यह एक प्राथमिकता है तथा देश हर क्षेत्र में अपनी रक्षा करने में सक्षम है।

लाल किले पर बच्चों के बीच ऐसे घिरे पीएम मोदी : आजादी की 71वीं सालगिरह पर दिल्ली ऐतिहासिक लाल किले से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को संबोधित किया. भाषण के बाद हर बार की तरह इस बार भी पीएम मोदी बच्चों से मिलने उनके बीच पहुंचे. लेकिन बच्चों का उत्साह इतना ज्यादा था कि पीएम के साथ–साथ एसपीजी के जवानों को भी काफी मशक्कत करनी पड़ी. दो–तीन मौके तो ऐसे आए जब पीएम मोदी अपनी पकड़ी संभालते दिखे, क्योंकि बच्चों की भीड़ उनके चारों ओर जमा हो गई थी और वहां बच्चों के बीच थोड़ी धक्का–मुक्का का भी माहौल था. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिलने के लिये बच्चों के बीच होड़ मची थी. पीएम को अपने बीच पाकर बच्चे काफी ज्यादा उत्साहित दिखे. पीएम ने स्कूली बच्चों से मुलाकात की जिनमें एनसीसी के कैडिड और जन्माष्टमी पर भगवान कृष्ण की वेशभूषा में बैठे बच्चे भी शामिल थे. लाल किले की प्राचीर से अपने संबोधन के बाद मोदी उनका अभिवादन कर रहे बच्चों से मिलने उनके बीच चले गये थे.

बच्चों में दिखा अपार उत्साह : पीएम मोदी भी भी बच्चों को देख खासे अभिभूत हुए. मोदी करीब 55 मिनट के अपने संबोधन के बाद समारोह स्थल पर मौजूद जनसमूह का हाथ हिलाकर अभिवादन करते हुये वहां से वापसी के लिये रवाना होने लगे, तभी बच्चों के हुजूम से आती आवाजें सुनकर वह बीच रास्ते से ही सुरक्षा घेरा तोड़ कर बच्चों के बीच चले गये. पीएम को अपने बीच पाकर बच्चों में उनसे हाथ मिलाने की होड़ मच गयी. मोदी से मिलने के बाद खुशी से सातवें आसमान पर महसूस कर रही एक छात्रा ने बताया कि पीएम ने सभी बच्चों से कहा कि हम लड़कियों को अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिये.

नया नहीं मोदी का बच्चों के प्रति लगाव : यह पहला मौका नहीं है जब बच्चों के प्रति मोदी का प्रेम सामने आया है. पिछले दिनों अपने गुजरात पर पीएम ने 4 साल की नैंसी से मिलने के लिए अपना वीवीआईपी काफिला रुकवा दिया था. साथ ही केदारनाथ में भी मोदी ने भीड़ में खड़े एक बच्चे को सुरक्षा घेरा तोड़कर दुलारा था. विदेश में भी पीएम मोदी खासतौर पर बच्चों से मुलाकात करते आए हैं. बच्चे ही क्यों अपने तमाम भाषणों में मोदी देश की युवा शक्ति का जिक्र करते रहते हैं और अपनी सरकार के प्रतिनिधियों और नेताओं से युवाओं के बीच अपनी पहुंच बढ़ाने की अपील करते रहते हैं.

पीएम मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के भाषण में किया गिलहरी का जिक्र, जानिए क्या है कथा

नई दिल्ली: स्वतंत्रता दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को संबोधित करते हुए देश के विकास में प्रत्येक नागरिक के योगदान का जिक्र किया. पीएम मोदी ने कहा कि हमारी सामूहिक संकल्प शक्ति, हमारा सामूहिक पुरुषार्थ, हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता और परिश्रम की पराकाष्ठा, 2022 में आजादी के दीवानों के सपनों के अनुरूप भारत बनाने के लिए काम आ सकती है और इसलिए न्यू इंडिया का संकल्प लेकर के हमें देश को आगे बढ़ाना है. उन्होंने कहा कि हम जानते हैं सामूहिकता की शक्ति क्या होती है. भगवान कृष्ण कितने ही सार्मथ्यवान थे लेकिन जब ग्वाले अपनी लकड़ी लेकर खड़े हो गए, एक सामूहिक शक्ति थी गोवर्धन पर्वत उठा लिया था. प्रभु रामचंद्र जी को लंका जाना था वानर सेना के छोटे–छोटे लोग लग गए, रामसेतु बन गया, रामजी लंका पहुंच गए. पीएम ने अपनी इस बात के संदर्भ में एक कहानी याद दिलाई. उन्होंने कहा कि छोटे–छोटे प्रयासों से ही बड़े काम संभव हो पाते हैं. हर किसी बड़े काम में छोटे से लेकर बड़े का योगदान अहम होता है. कोई छोटा नहीं होता, कोई बड़ा नहीं होता, अरे एक गिलहरी का उदाहरण हमें मालूम है, एक गिलहरी भी परिवर्तन की प्रक्रिया की हिस्सेदार बनती है, वो कथा हम सब जानते हैं और इसलिए सवा सौ करोड़ देशवासियों में न कोई छोटा है न कोई बड़ा है.

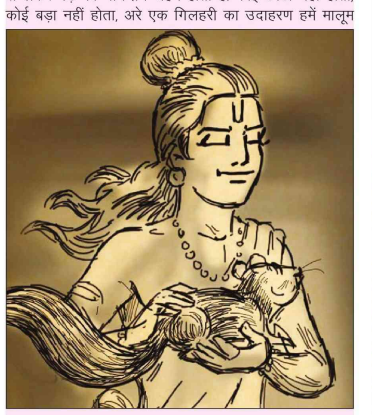

पीएम मोदी ने जिस गिलहरी की कहानी का जिक्र किया है उस कहानी के बारे में हम आपको बताने जा रहे हैं..

. : यह कथा उस समय की है जब भगवान राम की सेना माता सीता को लंका से लाने के लिए समुद्र पर सेतु निर्माण के कार्य में जुटी थी. इस कार्य में वानर सेना के साथ–साथ हर कोई योगदान दे रहा था. इस बीच लक्ष्मण ने भगवान राम को काफी देर तक एक ही दिशा में निहारते हुए देखा तो उनसे रहा नहीं गया और उन्होंने भगवान राम से प्रश्न किया, 'भैया क्या देख रहे हैं.' तब भगवान राम ने इशारा करते हुए लक्ष्मण से कहा 'उस तरफ देखो लक्ष्मण एक गिलहरी बार–बार समुद्र के किनारे जाती है और रेत पर लोट करके उसे अपने शरीर पर चिपका लेती है. फिर वह निर्माणाधीन सेतु पर जाकर अपनी सारी रेत झाड़ आती है. ऐसा वह काफी देर से कर रही है. लक्ष्मण बोले 'प्रभु वह समुद्र में क्रीड़ा कर रही होगी और कुछ नहीं. लेकिन भगवान राम ने गिलहरी के प्रयास को समझ लिया था और उन्होंने अपने अनुज से कहा 'नहीं लक्ष्मण तुम उस गिलहरी के भाव को समझने का प्रयास करो. आओ, गिलहरी से ही पूछ लेते हैं कि वह क्या कर रही है.' इसके बाद भगवान राम और लक्षमण उस गिलहरी के पास गए. भगवान राम ने गिलहरी से पूछा कि 'तुम क्या कर रही हो? तब गिलहरी ने उत्तर दिया कि कुछ नहीं प्रभु बस इस पुण्य कार्य में थोड़ा योगदान दे रही हूं. भगवान राम को उत्तर देकर गिलहरी फिर से अपने कार्य में जुट गई. लेकिन भगवान राम ने उसे टोकते हुए पूछा 'तुम्हारी रेत के कुछ कण डालने से क्या होगा?' गिलहरी ने कहा 'प्रभु आपका कथन सत्य है. लेकिन मैं इतनी छोटी हूं कि इस महान कार्य में इससे अधिक योगदान मैं क्या दे सकती हूं. प्रभु मैं यह कार्य किसी आकांक्षा से नहीं कर रही हूं, यह कार्य तो धर्म की अधर्म पर जीत का कार्य है. ऐसे में भला मैं कैसे पीछे रहती. मैं अपनी ओर से इस कार्य में निस्वार्थ योगदान देना चाहती हूं. गिलहरी की बात सुनकर भगवान राम भाव–विभोर हो गए. उन्होंने गिलहरी को अपनी हथेली पर बैठा लिया और उस पर प्यार से हाथ फेरने लगे. गिलहरी के इस छोटे से प्रयास से प्रसन्न होकर प्रभु श्रीराम ने उसकी प्रजाति को अपना प्रिय जीव बना लिया था. लाल किले की प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस पर संबोधन के दौरान राष्ट्रनिर्माण में हर एक व्यक्ति के योगदान की बात करते हुए पीएम मोदी ने इसी तरह से भागीदारी निभाने की अपील की. उनका कहने का आशय यही था कि राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाला कोई भी व्यक्ति छोटा या बड़ा नहीं होता है. मायने यह रखता है कि हम अपनी तरफ से इसके लिए क्या कर रहे हैं. देशवासी जितना हो सके निरूस्वार्थ भाव से राष्ट्रहित का कार्य करें'.अपनी इस बात को उन्होंने गिलहरी की इसी कथा की ओर इशारा करते हुए समझाया.

प्रधानमंत्री मोदी का साफा इस मामले में रहा पहले से अलग

नई दिल्ली। कई खास मौकों पर अपनी ड्रेस के कारण चर्चा में रहने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस बार स्वतंत्रता दिवस पर फिर से चर्चा में हैं. मोदी कुर्ता पहले ही काफी लोगों को आकर्षित कर चुका है. इस बार प्रधानमंत्री मोदी का साफा हर बार के साफे से काफी अलग था. पीएम ने लगातार चौथी बार साफा (खास तरह की पगड़ी) पहनकर लाल किले पर तिरंगा फहराया. इससे पहले भी प्रधानमंत्री तीन बार साफा पहनकर लाल किले की प्राचीर से देश की जनता को संबोधित कर चुके हैं. इस बार के साफे की लंबाई पहले पहने गए साफे से काफी ज्यादा थी. इस बार पीएम के साफे का पिछला हिस्सा काफी लंबा था, जो कि उनके घुटनों से नीचे तक जा रहा था. देश के अलग–अलग हिस्सों में साफा को गरीब की शान का प्रतीक माना जाता है.

सबसे लंबा साफा : इस बार प्रधानमंत्री मोदी केसरिया और पीले रंग के साफे में लाल किले पर तिरंगा फहराने पहुंचे थे. साफे का पिछला हिस्सा काफी लंबा था. यह हर बार के मुकाबले इतना लंबा था कि पीएम के घुटनों तक पहुंच रहा था. इसे प्रधानमंत्री का अब तक का सबसे लंबा साफा माना जा रहा था. पीएम के इस साफे को गुजराती साफा बताया जा रहा है.

जोधपुरी साफा : प्रधानमंत्री मोदी साल 2016 में जोधपुरी साफा पहनकर लाल किले पर पहंचे थे. इस बार उन्होंने बेहद सादा कुर्ता पहना था लेकिन लाल, गुलाब और पीले रंग के उनके जोधपुरी साफे ने सबका दिल जीत लिया था. यह जोधपुर का प्रसिद्ध गजशाही साफा था. इनमें सूती कपड़ों को सफेद, हरा, केसरिया, गुलाबी, पीले और लाल रंग की पट्टियों में ऐसा रंगा जाता है कि एक साथ एक कपड़े कई रंग में दिखते हैं. इस साफ को प्रधानमंत्री ने खुद पसंद किया था. 2016 में अलग–अलग तरह के पांच साफों को पीएम निवास भेजा गया था. उन साफों में से पीएम ने नौ मीटर लंबे केसरिया पट्टी वाले गजशाही साफे को पसंद किया था.

जयपुरी साफा : साल 2015 में प्रधानमंत्री मोदी ने लगातार 86 मिनट तक भाषण देकर नया रिकॉर्ड बनाया था. इसे लाल किले की प्राचीर से दी गई सबसे लंबी स्पीच कहा गया था. इसके अलावा इस बार प्रधानमंत्री मोदी अपने साफे को लेकर भी काफी चर्चा में रहे थे. इस साफे में हरी और लाल धारियां थीं. साफे के पिछले हिस्से की लंबाई पीएम मोदी की कमर तक थी.

लहरिया साफा : साल 2014 में जब नरेंद्र मोदी ने लाल किले पर पीएम को तौर पर पहली बार झंडा फहराया तब वह पूरी तरह तिरंगे के रंग में नजर आए थे. मोदी ने सफेद कुर्ते–पायजामे के साथ राजस्थान के बांधनी प्रिंट का केसरिया साफा पहना था. तिरंगे के तीसरे रंग को उनके लिबास में शामिल करने के लिए साफे का किनारा हरा रखा गया था.

मोदी ने निभाया अपना वादा, लाल किले से दिया 4 साल का सबसे छोटा भाषण

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लाल किले से देश को संबोधित किया. यह चौथा मौका था जब मोदी ने देश को लालकिले से संबोधित किया. इस बार पीएम मोदी ने 56 मिनट तक भाषण दिया. यह लाल किले से मोदी का सबसे छोटा भाषण है. पिछले साल उन्होंने लगभग 96 मिनट तक भाषण दिया था, जो कि किसी भी प्रधानमंत्री द्वारा सबसे लंबा भाषण था.

मन की बात में किया था वादा : भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने अपने 1947 के भाषण में 72 मिनट का भाषण दिया था. बता दें कि प्रधानमंत्री ने पिछले महीने अपने रेडियो कार्यक्रम मन की बात के दौरान कहा था कि वह इस बार अपना भाषण छोटा रखेंगे. इससे पहले 2014 में पहली बार भाषण देते हुए उन्होंने 65 मिनट का वक्त लिया था, तो वहीं 2015 में मोदी 86 मिनट तक बोले थे.

मनमोहन, वाजपेयी से भी लंबा भाषण : पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने लाल किले से 10 भाषण दिए, जिनमें से केवल दो बार ही उन्होंने 50 मिनट से अधिक का समय लिया था, वो भी 2005 और 2006 में. बाकी आठ साल मनमोहन सिंह के भाषण 32 से 45 मिनट के बीच में ही रहे. वहीं पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी ने भी अपने कार्यकाल के दौरान 30 से 35 मिनट के ही भाषण दिए. वाजपेयी ने 2002 में अपनी सबसे छोटी स्पीच 25 मिनट की और 2003 में 30 मिनट का भाषण दिया था. बता दें कि मंगलवार को अपने भाषण के दौरान पीएम मोदी ने देश की सीमाओं की सुरक्षा, सर्जिकल स्ट्राइक, गोरखपुर घटना समेत कई अन्य मुद्दों के बारे में बताया. पीएम ने इसके अलावा नोटबंदी, जीएसटी के फायदे भी गिनाए.

''भारत जोड़ो।'' प्रधानमंत्री ने तीन तलाक मुद्दे का जिक्र करते हुए कहा, ''.. मैं उन बहनों का अभिनंदन करना चाहता हूं जो तीन तलाक के कारण बहुत ही दुर्दय जिंदगी जीने के लिए मजबूर हुई हैं। कोई आश्रय नहीं बचा है, और ऐसी पीड़ित, तीन–तलाक से पीड़ित बहनों ने पूरे देश में एक आंदोलन खड़ा किया है। देश के बुद्धिजीवी वर्ग को हिला दिया, देश के मीडिया ने भी उनकी मदद की, पूरे देश में तीन–तलाक के खिलाफ एक माहौल निर्माण हुआ। इस आंदोलन को चलाने वाली उन है।काले धन के सफाये पर अपनी प्रतिबद्धता का उल्लेख करते हुए मोदी ने कहा कि 500 रूपये और 1000 रूपये के नोटों की समाप्ति के पिछले साल नवंबर के फैसले के चलते तीन लाख करोड़ रूपये की अघोषित संपत्ति बैंकिंग प्रणाली में आयी है। मोदी ने कहा कि नोटबंदी के बाद 1.75 लाख करोड़ रूपये बैंकों में जमा कराये गये तथा आय से अधिक संपत्ति के मामले में 18 लाख से अधिक लोग सरकार के समीक्षा दायरे में हैं। उन्होंने कहा, ''जिन लोगों ने देश को लूटा, जिन लोगों ने गरीबों को

1) ना गाली से समस्या सुलझने वाली है, ना गोली से सुलझने वाली है, समस्या सुलझने वाली है गले लगाने से।
2) मैं देशवासियों से आग्रह करूंगा कि तब भारत छोड़ो नारा था, आज भारत जोड़ो नारा है।
3) न्यू इंडिया में तंत्र से लोक नहीं, लोगों से तंत्र चले ऐसा लोकतंत्र न्यू इंडिया की पहचान बने। ऐसा न्यू इंडिया चाहते हैं।
4) ऐसा देश बनाना चाहते हैं, जहां देश का किसान चिंता में नहीं, चौन से सोएगा।
5) सवा सौ करोड़ देशवासियों की टीम इंडिया के लिए 2022 तक न्यू इंडिया बनाने का संकल्प लेना होगा।
6) सुदर्शन चक्रधारी मोहन से लेकर चरखाधारी मोहन तक, ऐसी ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत के हम धनी हैं।
7) साधक हो, साधन हो और सामर्थ्य हो और संसाधन हो। जब ये त्याग और तपस्या से जुड़ जाते हैं, कर गुजरने के इरादे से जुड़ जाते हैं तो संकल्प सिद्धि में बदल जाता है।
8) चलता है का जमाना चला गया। अब आवाज यही उठे कि बदला है, बदल रहा है और बदल सकता है।
9) आज हम देश को नए ट्रैक पर ले जा रहे हैं, लेकिन स्पीड कम नहीं हुई है।
10) परिवार में भी खाना रोज पकता है, व्यंजन सभी बनते हैं, लेकिन जब ये खाना भगवान के सामने चढ़ा दिया जाता है, तो वो प्रसाद बन जाता है।